International Journal of Education and Science Research Review

IJESRR

Volume-6, Issue-6 December- 2019

E-ISSN 2348-6457
P-ISSN 2349-1817

www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

संजीव के कथा–साहित्य में चित्रित निम्नवर्गीय समाज का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सामाजिक अध्ययन

कविता रानी

शोधार्थी, पीएच.डी. (हिन्दी),

कैपिटल विश्वविद्यालय, कोडरमा, झारखंड

डॉ. ममता सिंह

शोध–निर्देशिका, हिन्दी–विभाग

कैपिटल विश्वविद्यालय, कोडरमा, झारखंड

प्रस्तावना :

सदियों से भारतीय समाज अनेक जाति, धर्म, वर्ण तथा श्रेणियों में बँटा हुआ है। आधुनिक युग में 19वीं सदी के प्रारंभ में व्यावसायिक एवं औद्योगिकीकरण के प्रभाव से आर्थिक आधार पर विविध वर्ग निर्मित हुए हैं। संजीव के कथा–साहित्य में आर्थिक विषमता का विशेषतः शोषित, पीड़ित एवं निम्न वर्ग का यथार्थ चित्रण मिलता है।

संजीव के कथा–साहित्य में चित्रित निम्नवर्गीय समाज का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सामाजिक अध्ययन :

संजीव के कथा–साहित्य में निम्न वर्ग के अधिकांश लोग कोयला खदान, कारखानों में मजदूरी करते हैं। यह समाज आर्थिक अभाव के कारण दयनीय अवस्था में जिंदगी व्यतीत करता है। निम्न वर्ग को रोजाना काम मिलने का भरोसा नहीं है। हर दिन निम्न वर्ग के लोग रोजी–रोटी की चिंता में डूबे हुए दृष्टिगोचर होते हैं। कारखाने में काम करने वाले मजदूर कारखाने की एक शिफ्ट बंद होने पर आर्थिक अभावों में दिन गुजारते हैं। कोयला खदान में काम करते हुए मजदूर असुरक्षित जीवन बीताते हैं। 'भूखे रीछ', 'चाकरी', 'हलफनामा', 'लांग साइट', 'फुटबॉल', 'धनुष टंकार', 'लोड शेडिंग', 'कदर', 'सागर–सीमांत' तथा 'ऊष्मा' आदि कहानियों में निम्न वर्ग के पात्र खदानों में तथा कारखानों में काम करते हैं तथा कुछ सेठ, साहूकार के यहाँ चाकरी करते हैं। कारखाने में काम करने वाले मजदूरों को कारखाना बंद होने से जिंदगी किस तरह बितेगी यह चिंता सताती है। निम्न वर्ग के लोग काम–काज न मिलने से बेकार हैं वे काम–काज की तलाश में कारखानों में व्यवस्थापक के पास चक्कर काटते हुए परिलक्षित होते हैं।

'सर्कस' उपन्यास में सर्कस में काम करने वाले लोग सर्कस को ही अपना सहारा मानकर जिंदगी व्यतीत करते हैं। 'जंगल जहाँ शुरू होता है' उपन्यास में नहर के ठेकेदार द्वारा मजदूरों का शोषण होता है तब तंग आकर निम्न वर्ग के लोग डाकू बन जाते हैं। 'सूत्रधार' में भिखारी ठाकुर नाई का काम करता है। उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि संजीव के कथा–साहित्य में कारखानों में तथा खदानों में काम करने वाले निम्न वर्ग का चित्रण अधिक मात्रा में मिलता है।

1. निम्न वर्ग का जीवन :

संजीव ने 'कुल्टी' में 'ईस्पात' कारखाने में कामगारों के साथ उम्र के पचपन साल तक काम किया है तथा कुल्टी के पड़ोसी झारखंड राज्य में कोयला खदानों में काम करने वाले, कामगार तथा आदिवासी के असहाय जीवन को देखा है, अनुभव किया है उस असहाय जीवन को सूक्ष्म यथार्थ रूप में अपने कथा–साहित्य में चित्रित किया है जो वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी समाज में यथावत सििति में है। निम्न वर्ग में समाज का वह वर्ग आता है जो आर्थिक अभाव में जीता है। इस वर्ग की आर्थिक स्थिति अत्यंत कमजोर होती है। इस वर्ग के असंख्य सदस्यों का जीवन गन्दी बस्तियों में रहते हुए बीतता है। परिश्रम करके अपनी जीविकोपार्जन करते हैं। परिश्रम करके भी दिया जाने वाला व्यय उचित और समय पर न मिलने से तथा रोजाना काम–काज न मिलने से गरीबी में जीता है।

संजीव जी कृत 'भूखे रीछ' कहानी में रामलाल कारखाने में काम करता है। कारखाने से मिलने वाली मजदूरी से परिवार का पेट भर पाना मुश्किल है इसलिए रामलाल रोज आठ घंटे काम करता है, मिल गया तो ज्यादा काम (ऊपर टैम) करता है। रात–दिन कारखाने में काम करने पर भी उचित वेतन न मिलने से रामलाल की बेटी फ्रॉक पहनकर पानी लाने जाती है। रामलाल अपनी बेटी को न ढंग का फ्रॉक ला सकता है न बेटी को कुछ दे पाता है। यहाँ तक कि बेटे को एक छटाँक दूध भी नहीं दे पाता। अपनी गरीबी से तंग आकर रामलाल कहता है–

''साला, कारखाने में कोई मरता या बीमार भी नहीं पड़ता कि ऊपर टैम हो...।''[1]

इस कथन से विदित होता है निम्न वर्ग गरीबी में असहायता में जीता है। रात–दिन मेहनत करने पर भी परिवार का पालन–पोषण ठीक ढंग से नहीं कर पाता।

निम्न वर्ग झुग्गी–झोंपड़ियों में रहकर जीवन बिताता है। 'चाकरी' कहानी में कथा–नायक और उसके माता–पिता गाँव छोड़कर हावड़ा में आते हैं। बेसहारा स्थिति में आकर हावड़ा प्लेटफार्म के किनारे रहने लगते हैं। कथा–नायक अपनी व्यथा बताता है–''बाबूजी को किसी होटल में टेबल पर कपड़ा मारने का और माँ को होटल में जूठे बर्तन मलने का काम मिल गया.... रहने के लिए होटल के बगल में ही टीन को घेरकर एक आश्रम बना लिया गया। ....वहाँ पास ही नालियों के चलते हमेशा ही सीलन की कचरौध भरी रहती। ...सीलन और अँधेर का लाभ उठाकर मच्छरों की खासी बाढ़ बनी रहती जो हमें दिन–रात नोचा करते। रात को हम खाली गॅरेजों में सोया करते जहाँ कभी–कभी लावारिस कुत्तों और भिखारियों से संधि करनी पड़ती।''[2] इस कथन से विदित होता है कि निम्न वर्ग को आश्रय के लिए ठीक जगह भी नहीं मिल पाती। मच्छरों से सीलन और अँधेरे में रहना पड़ता है।

निम्न वर्ग का जीवन असुरक्षित जीवन है। हर समय जिंदगी और मौत का सामना करना पड़ता है। संजीव जी कृत 'सर्कस' उपन्यास में सर्कस में काम करने के लिए ताकत और इंटरटेनमेंट करने वाले की जरूरत होती है। 'जैनुल' अपनी कला का हुनूर दिखाने के लिए सर्कस में एक्रोबेट खेलकर दिखाता है। एक शो में जैनुल एक्रोबेट खेल दिखाते

समय खेल में छोटी–सी गलती उसकी मौत का कारण बन जाती है। लेखक लिखते हैं–''टाँगे तिरछी पड़े जमीन पर कटे पेड़ की तरह गिरा जैनुल सर पटरे पर! सद्यः मृत अजगर की तरह।''[3]

संजीव जी कृत 'सागर–सीमांत' कहानी में केओड़ाखाली में बीस मछुआरों के झोंपड़ों में से एक झोपड़ी में करीम रहता है। करीम और उसके अन्य मछुआरे साथी सागर में जाकर मछलियाँ पकड़ते हैं। मछुआरों का जीवन असुरक्षित जीवन है। कभी तूफान से तो कभी सुनामी से जान को खतरा पैदा होता है। करीम और उसके साथी सागर में मछलियाँ पकड़ने जाते हैं तभी भीषण तूफान में फंस जाते हैं।

लेखक लिखते हैं–''वैसा तूफान केओड़ावाली में न कभी आया था न फिर कभी आएगा। सब कुछ उलट–पुलट गया उस तूफान में।''[5] इस कथन से विदित होता है कि यहाँ मछुआरों का जीवन कितना असुरक्षित है। समुद्र में गए नौ मछेरे में से एक का भी पता नहीं लग पाया।

2. निम्न वर्ग का काम–काज :

जीविकोपार्जन के लिए किए जाने वाले किसी भी काम को 'काज–काज' कह सकते हैं। निम्न वर्ग किसी भी प्रकार के श्रम के द्वारा अपना जीविकोपार्जन करता है क्योंकि निम्न वर्ग की आय का कोई निश्चित साधन नहीं होता। निम्न वर्ग अनपढ़ या कम पढ़ा–लिखा होने के कारण उसे जैसे, उद्योगपति, जमींदार, सेठ तथा कारखाना मालिक के यहाँ काम करके जीविकोपार्जन करना पड़ता है। निम्न वर्ग में बहुत से लोग अनपढ़ होने से पेशेवर काम–काज या फेरीवाले विक्रेता के रूप में काम करते हैं।

संजीव के कथा–साहित्य में निम्न वर्ग कारखानों में, कोयला खदानों में तथा जमींदारों के यहाँ काम करता हुआ अत्यधिक परिलक्षित होता है। 'सावधान! नीचे आग है' उपन्यास के चित्रित ऊधमसिंह, आशीष, जगन, झानू, सोमारु, हेम्ब्रवा, छेदी, मंगूत, सूखनबाउरी आदि मजदूर कोयला खदान में काम करके जीविकोपार्जन करते हैं।

संजीव कृत 'सर्कस' उपन्यास में झरना, गीता, रीता, चंद्रा, नासिरा, सुगिया हिजड़ा, सूरज बौना, जोकर, रामूदादा तथा जैनुल आदि सर्कस में अलग–अलग काम करते हैं। एक बंधुआ मजदूर की तरह जिंदगी बिताते हैं। 'जंगल जहाँ शुरू होता है' उपन्यास में काली ठेकेदार के यहाँ नहर पर मजदूर का काम करता है। परेमा, नोनिया तथा परशुराम आदि डाकू लूटमार कर जीविकोपार्जन करते हैं। इनका न घर है न गाँव, पुलिस के डर से वे जंगल में भूखे–प्यासे भटकते जीवन जीते हैं। संजीव कृत 'भूखे रीछ' कहानी में रामलाल कारखाने में मजदूरी करता है। लेखक लिखते हैं–''छह की सायरन की हुहुँआहट शुरू हो रही है और बिना कोई जवाब दिये वह दौड़ पड़ता है, कारखाने के गेट पर।''[6]

''काम! काम!! काम!!! काम करते–करते उसकी जिंदगी भी एक मशीन बनकर रह गयी है।''[7]

इस कथन से विदित होता है कि कारखाने में काम करने वाले निम्न वर्ग के मजदूर अपनी जिंदगी में सुख तथा आराम से वंचित दिखाई देते है।। श्रम ही उनकी जिंदगी है।

सजीव कृत 'धनुष टंकार', 'चुनौती', 'नेता', 'मक्तल', 'कन्फेशन' तथा 'हलफनामा' आदि कहानियों में कारखानों में काम–काज करने वाला निम्न वर्ग परिलक्षित होता है। 'गो–लोक' कहानी में सेठ घिनूदास के फैक्टरी में पाँच–सौ इक्यावन आदमी काम करते हैं। 'चुनौती' कहानी में कामतानाथ कारखाने में काम करते हैं।

लेखक लिखते हैं–''पाँच साल से लगातार घाटे में चल रहे कारखाने के मोल्डिंग मिस्तिरी और इनाम पाये मजदूर होकर भी कामतानाथ बिना काम के घंटों बैठ–बैठकर घर चले आते।''[8]

संजीव कृत 'आप यहाँ हैं' कहानी में हिदिया नौकरानी का काम करती है। 'सागर–सीमांत' में निम्न वर्ग के लोग मछुआरे का काम करते हैं। 'प्रेत–मुक्ति' कहानी में चलित्तर महतो जमींदार के खेत में काम करता है। 'कदर' कहानी का बोदा तथा 'ऊष्मा' कहानी का बरसाती जमींदार के यहाँ चाकरी का काम करते हैं। 'खिंचाव' कहानी में नट–बाजीगर का काम–काज करते हैं।

संजीव कृत 'मरोड़' कहानी में मास्टर साहब सेठ चन्दानियाँ के घर उनके बच्चों को पढ़ाने का काम करते हैं। संजीव के कथा–साहित्य में निम्न वर्ग के रूप में कारखानों में तथा खदानों में काम करने वाले मजदूरों के काम–काज का चित्रण अत्यधिक दृष्टिगोचर होता है।

3. निम्न वर्ग का शोषण विषयक यथार्थ :

संजीव ने अपने कथा–साहित्य के माध्यम से निम्न वर्ग के शोषित यथार्थ का चित्रण कर तथा आर्थिक विषमता को दूर करने के लिए अपनी वामपंथी दृष्टि का परिचय दिया है। उच्च वर्ग या पूँजीपति वर्ग द्वारा निम्न वर्ग का शोषण किया जाता है इसका वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सूक्ष्म सामाजिक चित्रण संजीव के कथा–साहित्य क आधार पर इस प्रकार से है–

उच्च वर्ग/पूँजीपति वर्ग द्वारा शोषण :

'किसनगढ़ के अहेरी' उपन्यास में जमींदार इनरपतिसिंह के बेटे रुपई ठेकेदारी में सरकारी सड़क बनाने का काम लेता है और गाँव में नेता के रूप में घूमता है। गाँव के हलवाह मजदूर सरकार द्वारा तय मजदूरी न मिलने पर सारे हलवाह हल चलाना बंद करते हैं। अपना पक्ष रखने के लिए रुपई के पास आते हैं तब रुपई सबके सामने धमकाते हुए कहता है– ''काम पर सीधे तौर पर चले आओ वरना सबकी कटवा देंगे। सरकार यहाँ हम हैं तुम्हारी, हम जो कहेंगे, किसनगढ़ में वही होगा।''[9] इस कथन से विदित होता है कि उच्च वर्ग के लोग अपने रौब में डरा–धमकाकर निम्न वर्ग पर अत्याचार करते हैं। सरकार द्वारा तय मजदूरी उन्हें देते नहीं। इससे उच्च वर्ग की शोषण वृत्ति स्पष्ट होती है।

'सर्कस' उपन्यास में सर्कस में काम करने वाली चन्द्रा को सर्कस मालिक नियोगी अनाथाश्रम से खरीद लाते हैं। चौदह साल की चंद्रा सर्कस में काम करके जीविकोपार्जन करना चाहती है। चंद्रा का प्रशिक्षक रघुनाथ लैंगिक उत्पीड़न करता है। तब चन्द्रा रघुनाथ के बारे में सर्कस मालिक के पास शिकायत करती है, तब नियोगी उल्टे चंद्रा को डाँटते हैं। सर्कस मालिक नियोगी और रघुनाथ की मिलीभगत द्वारा चंद्रा का शोषण होता है।

बेबस चंद्रा अपनी साथी कलाकार शुभलक्ष्मी को अपना दर्द बताती है–''बहन... तुझे क्या बताऊँ, रात–दिन मैं किस असुरक्षा के बीच घिरी पाती हूँ।''[10] इस कथन से स्पष्ट है कि नारी अकेली होती है तो मालिक लोग उसका दैहिक शोषण करते हैं।

'हलफनामा' कहानी में कारखाना मालिक के शोषण तंत्र का शिकार हुआ मजदूर अपने दर्द में जीता है। कारखाना मालिक अपने धन और बल के दबाव से अपने कारखाने में काम करने वाले मजदूर की पत्नी से अनैतिक संबंध रखता है। जिस मजदूर की पैंट हिप पर फटी हुई है वह मजदूर न तो उस व्यवस्था से लड़ पाता है न उस व्यवस्था को सह पाता है। मजदूर अपनी विवशता का बयान करता है–''उसने मुझे अपनी बीवी से काट दिया, बच्चे से काट दिया, दोस्तों से काट दिया, समाज से काट दिया, खुद मुझको मुझसे काट दिया।''[11] इस कथन से विदित होता है कि पूँजीपति मजदूरों का आर्थिक, मानसिक एवं पारिवारिक शोषण करते हैं। जब यह मजदूर अपने शोषण के बारे में कारखाना मालिक के खिलाफ सवाल करता है तब उसके परिणाम उसे भुगतने पड़ते हैं।

मजदूर कहता है–''जब मैं अपने घर या दबड़े में पहुंचा तो सेठ के लठैत पहले से हाजिर थे ...तुझे तो सेठ के नौकरी से भी डिसमिस कर दिया और इस सरवेन्ट कवार्टर से भी तेरा सारा सामान ये पड़ा है। ले इन्हें सँभाल और फूट यहाँ से।''[12]

इस कथन से विदित होता है कि पूँजीपति धन और सत्ता के बल पर अपने स्वार्थ के लिए निम्न वर्ग की जिंदगी उजाड़ देते हैं। 'ऊष्मा' कहानी में बरसाती जमींदार के यहाँ बलिहारी करता है। जमींदार ने गाँव के गरीब किसानों की जमीन छीन ली है। जमीन इतनी है कि सरकार को टैक्स भरना न पड़े इसलिए बरसाती के नाम पर जमीन कर दी है। बरसाती की शादी बचपन में हुई है। बरसाती की बीवी जमींदार के यहाँ हवेली के अंदर नौकरानी का काम करती है। इस बात का पता बरसाती को नहीं है। जमींदार को उनके गोतिया–दयाद ने गोली मारने से उसका पूरा परिवार पटना भाग जाता है। तब बरसाती पूरी हवेली की परिक्रमा करता है। वहाँ छबीली और बरसाती की भेंट होती है। छबीली अपने पर हुए अत्याचार को बरसाती से बताती है–

''हमको धमकाया गया जी, कि तुमरे मरद को मार डालेंगे?''[13]

इस कथन से विदित होता है कि जमींदार बरसाती और उसकी पत्नी का शोषण बंधुआ मजदूर के रूप में करते हैं। जमींदार की मर्जी से बरसाती तथा उसकी पत्नी को जीवन बिताना पड़ता है। लेखक ने जमींदारों के स्वार्थी तथा धनलोलुप वृत्ति पर प्रकाश डाला है।

ठेकेदार तथा दलाल द्वारा शोषण :

ठेके पर काम लेने वाले ठेकेदार के पास मजदूर काम करते हैं। निम्न वर्ग के काम का कोई निश्चित स्वरूप न होने से वे कोई भी काम करके अपनी मिलने वाली मजदूरी से जीविकोपार्जन करते हैं। निम्न वर्ग अज्ञानी, अशिक्षित तथा गरीब होने से इस वर्ग की मजबूरी का लाभ उठाकर ठेकेदार और दलाल उनका आर्थिक एवं शारीरिक शोषण करते हैं। संजीव कृत 'सावधान! नीचे आग है' उपन्यास में अपने देश एवं माटी से अलग हुए मजदूर चंदनपुर कोयला खदान में काम करते हैं। रायपुरिया मजदूर ठेकेदार नाथबाबू के पास काम करता है, वह भी अपना गाँव छोड़कर चंदनपुर में रहता है। ठेकेदार के पास काम करने से अपनी हालत कथा–नायक से कहता है–''पहिले ठीकेदार नाथबाबू हियों जंगल में ला के छोड़ गये। अब कोई नहीं पूछता... हम का खायें और का खिलायें बाल–बच्चों को...?''[14]

इस कथन से विदित होता है कि ठेकेदार अपने काम–काज के लिए दूर–दराज से मजदूरों को जरूर ले आते हैं। लेकिन मजदूरों की जिम्मेदारी को वहन नहीं करते बल्कि उन्हें बेसहारा छोड़कर चले जाते हैं। अतः स्पष्ट है कि निम्न वर्ग को असुरक्षित जिंदगी बितानी पड़ती है।

दलाल को बिचौलिया भी कहते हैं। जिसका काम कमीशन खाना है तथा सौदेबाजी में कभी भावुक नहीं होना है। आज हर क्षेत्र में दलाली करते हैं। लड़की का रिश्ता तय करना हो या गाड़ी चलाने का लायसेन्स निकालना हो तो दलाल द्वारा तुरंत होता है। दलाल मजबूर लोगों को तो बहुत ही लूटते हैं। दलाल के लिए पढ़े–लिखे, अनपढ़ सब समान हैं। अगर उसमें नारी हो तो उसकी हालत जाल में फँसे मछली जैसी होती है। गरीबी से तंग आकर लड़की दलाल को बेचने वाला बाप विवेच्य कथा–साहित्य में परिलक्षित होता है। सदियों से नारी शोषित पीड़ित रही है। वह कभी पुरुष की कठपुतली बनकर तो कभी दासी बनकर। नारी की स्थिति के बारे में प्रो. गोपालराय कहते हैं– ''आजादी मिलने पर विशेषकर भारतीय संविधान लागू होने के बाद भारतीय समाज में स्त्री की स्थिति में जबरदस्त बदलाव आ गया। ...'हिंदू कोड बिल' इस कानून ने भारतीय नारी को सदियों से चले आ रहे अनेक आर्थिक, सामाजिक और नैतिक पक्षपातों से मुक्त कर दिया।''[15]

इस कथन के आधार पर कहा जा सकता है कि शहरों में रहने वाली तथा शिक्षित नारी की स्थिति में बदलाव आ गया है। लेकिन देहातों में अनपढ़ नारी की सामाजिक स्थिति बहुत ही दयनीय परिलक्षित होती है। लेकिन वर्तमान में किसी भी काम में दलाली करके पैसा कमाने वाले दलाल मौजूद हैं। संजीव ने अपने कथा–साहित्य में दलालों की स्वार्थी संवेदनशून्य वृत्ति का यथार्थ चित्रण किया है।

पुलिस द्वारा शोषण :

पुलिस का काम कानून तोड़ने वाले अपराधियों को पकड़कर सजा दिलवाना तथा समाज में शांति बनाये रखना है। जनता पुलिस को अपना संरक्षक मानती है। संकट के समय पुलिस ही सहायता करती है। पुलिस को लेकर यही धारणा समाज में बनी हुई है।

संजीव जी कृत 'अपराध' कहानी में राखलबाबू सेनिटोरियम में बीमारी से जूझ रहे हैं। पुलिस राखलबाबू के बेटे शचिन और बेटी संघमित्रा को नक्सली मानकर पकड़ लेती है। शचिन का मित्र सिद्धार्थ अपराध पर शोधकार्य के लिए जेल में अपराधियों से मिलने के लिए जाता है, तब जेल सुपरिटेंडेंट नक्सली कैदियों से निर्दयतापूर्वक व्यवहार करते हैं।

कथा–नायक कहता है–''मेरे सामने एक ही जोरों का मुक्का उसके जबड़ों पर पड़ा और उसका चश्मा दूर जा छिटका वे फिर से बड़ी निर्दयतापूर्वक उसके बालों को पकड़कर नचाने लगे।''[16]

आगे सिद्धार्थ अपने मित्र शचिन से मिलता है तब वह संघमित्रा जेल में कहाँ है? पूछने पर शचिन कहता है– ''उसके गुप्तांग में रूल घुसाकर... मथकर मारा गया।''[17] इस कथन से विदित होता है कि जनता की रक्षा एवं मदद करने वाली पुलिस के हाथों संघमित्रा मारी जाती है। लेखक ने यहाँ सुरक्षा व्यवस्था में प्रचलित यथार्थ को अभिव्यक्ति दी है।

संजीव जी कृत 'किसनगढ़ के अहेरी' उपन्यास में जमींदार इकबालसिंह द्वारा मिश्र जी की हत्या होती है। जमींदार इकबालसिंह का अभी तक कुछ भी बिगाड़ नहीं पाये थे क्योंकि उन्होंने ऊपर से नीचे सबको पैसों से तौल रखा था। विधवा राधा को कोई सहारा नहीं इसलिए वह मामा के पास रहती है। मिश्रजी के हत्यारे की तलाश में जब भी दरोगाजी गाँव में आते तब उनकी सेवा करना ब्रह्मचारी जी को लाजमी होता है।

लेखक पुलिस की शोषण वृत्ति पर कहते हैं–''दरोगाजी के दो पुलिस के जवान और समपत कहांर मिलकर निरामिषा मिश्रजी के बैठक में आमिष पका रहे थे– बिलायती शराब मंगानी पड़ी नजराने के लिए... पाँच किलो घी, खांड का एक टिन, बासमती चावल का एक बोरा, पके पपीतों और अमरूद की दो पेटियाँ...। लेकिन नजराने में दरोगाजी ने जिस चीज की माँग कर दी थी उसकी कल्पना भी नहीं की थी ब्रह्मचारीजी ने। ...मुझे राधा चाहिए, सिर्फ राधा।''[18]

महाजन द्वारा शोषण :

निम्न वर्ग के लोग आर्थिक अभाव के कारण त्यौहार, शादी, रोजगार आदि के लिए महाजन (सूदखोर) से कर्जा लेते हैं। निम्न वर्ग के लोग अनपढ़ तथा अज्ञानी होने के कारण महाजन के पास से लिए हुए कर्जे के सूद की गुत्थी समझ में नहीं आती। समय पर सूद न देने के कारण महाजन निम्न वर्ग का आर्थिक, शारीरिक तथा मानसिक शोषण करता है। निम्न वर्ग पर अत्याचार करता है। महाजन से ऋण लेने के संदर्भ में डॉ. मुहम्मद फरीदुद्दीन कहते

हैं–''ऋण एक ऐसा रोग जो व्यक्ति को एक बार पकड़ लेने पर शीघ्र छोड़ता नहीं। महाजन के अर्थ जाल से मुक्त होना दुष्कर ही है।''[19]

इस कथन से विदित होता है कि महाजन के अर्थ–जाल में गरीब का जीना और भी दुष्कर बन जाता है तथा उसके सूद का जाल कर्जदार को चिंता और भय में तड़पा के मारता है।

संजीव जी कृत 'सावधान! नीचे आग है' उपन्यास में सूद पर कर्जा लेने वाला छेदी पेमेंट के दिन महाजन रामबुझारथसिंह के लठैतों को देखकर छेदी भागने लगता है।

कथा–नायक कहता है–''एक फटीचर–से भागते आदमी की कमर में दोनों हाथ डालकर उसे लिये–दिये गिरा। तब तक धोतीधारी दो जवानों ने उसे उस आदमी के गिरेबान से पकड़कर उठा लिया और घसीटते हुए एक आदमी के पास ले आये।''[20] इस कथन से विदित होता है कि निम्न वर्ग के मजदूर अपनी विवशता के कारण महाजन से कर्ज ले लेते हैं उस कर्ज का सूद समय पर न देने से उन पर अत्याचार किए जाते हैं।

संजीव जी कृत 'सागर–सीमांत' कहानी के मछुआरे महाजन के पास काम–काज करते हैं। समुद्र में जाकर मछलियाँ पकड़ते हैं। समुद्र खौलने की सूचना न मिल पाने से अनेक मछुआरे समुद्र में लापता होते हैं। समुद्र का मिजाज मछुआरे नहीं जान सकते।

बूढ़ा नूर कहता है–''समुद्र का मिजाज तो थोड़ा बहुत समझ भी लें, लेकिन महाजन का मिजाज...? ...यहाँ तो नावें चटर्जी बाबू की, जाल चटर्जी बाबू के। हम लोग क्या हैं– सिर्फ भाड़े के टट्टू! नाव भर–भर कर चाँदी–सी चमकती मछलियों की ढेर लदी आती है और हमारे हिस्से क्या आता है? छाई (खाक)... गहरे पानी की मछली है महाजन। मछली के तेल से मछली तलने वाला।''[21]

स्पष्ट है कि महाजन मछुआरों का शोषण करता है। रात–दिन मेहनत करने पर भी उन्हें उचित दाम नहीं मिलता। रेडियो से खबर मिलने पर भी महाजन उन्हें समुद्र में जाने से रोकता नहीं है। यहाँ महाजन की स्वार्थी तथा अमानवीय वृत्ति दिखाई देती है।

निष्कर्ष :

संजीव जी के कथा–साहित्य में प्राप्त निम्नवर्गीय समाज के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सामाजिक अध्ययन को करने के पश्चात् कहा जा सकता है कि निम्न वर्ग आर्थिक अभाव में रहन–सहन तथा औकात से निम्नस्तर का जीवन जीता है। निम्न वर्ग की आय का न कोई निश्चित साधन है और न कोई निश्चित मात्रा उसे कई दिन काम न मिलने पर बेकार रहना पड़ता है। इस वर्ग के लोग काम मिलने पर परिश्रम करके जीविकोपार्जन करते हैं। कारखानों, खदानों, जमींदारों तथा

ठेकेदारों के यहाँ निम्न वर्ग मजदूरी करके जीविकोपार्जन करता है। यह वर्ग श्रम का उचित दाम न मिलने पर आर्थिक अभावों को झेलते हुए गरीबी में जीवनयापन करता है। निम्न वर्ग का जीवन काम–काज के समय खतरों से गुजरता है। निम्न वर्ग पूँजीपति, कारखाना मालिक, खदान मालिक, जमींदार, महाजन, सूदखोर, सेठ, ठेकेदार तथा दलाल आदि में आर्थिक एवं शारीरिक शोषण करते हैं।

यही कारण है कि निम्न वर्ग में प्रतिरोध एवं विद्रोह की भावना पनपती नजर आती है। निम्न वर्ग की सामाजिक स्थिति आर्थिक अभाव के कारण बहुत ही दयनीय परिलक्षित होती है। निम्न वर्ग अभावों से युक्त जिंदगी में अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति भी नहीं कर पाता है। यह वर्ग समाज के अन्य वर्गों से असुरक्षित, उदासीन तथा संघर्षमयी जीवन जीता है। आर्थिक अभाव से ग्रस्त होने से वह गरीबी में, रोजगार की चिंता में, असुरक्षित तथा अस्वस्थता में अपना जीवन बिताता हुआ परिलक्षित होता है।

संदर्भ सूची :

1. संजीव, भूखे रीछ, पृ. 64
4. संजीव, चाकरी, पृ. 73
3. संजीव, सर्कस, पृ. 96
4. संजीव, धनुष टंकार, पृ. 20
5. संजीव, सागर–सीमांत, पृ. 145
6. संजीव, भूखे रीछ, पृ. 56
7. वही, पृ. 58
8. संजीव, चुनौती, पृ. 75
9. संजीव, किसनगढ़ के अहेरी, पृ. 62
10. संजीव, सर्कस, पृ. 36
11. संजीव, हलफनामा, पृ. 121
12. वही, पृ. 123
13. संजीव, ऊष्मा, पृ. 15
14. संजीव, सावधान! नीचे आग है, पृ. 15
15. प्रो. गोपालराय, हिंदी उपन्यास का इतिहास, पृ. 419
16. संजीव, अपराध, पृ. 24
17. वही, पृ. 30
18. संजीव, किसनगढ़ के अहेरी, पृ. 11
19. डॉ. मुहम्मद फरीदुद्दीन, राही मासूम रजा के उपन्यासों का समाज, पृ. 132
20. संजीव, सावधान! नीचे आग है, पृ. 37, 38

21. संजीव, सागर–सीमांत, पृ. 147